

Class = VIII Date = 3/3 Chapter No. 6
Subj = E.S.L. (प्रौढ़ता लिखाया गया अनिज, 2011, 65)

मनुषीव जीवों भी जीवा कहते हैं शब्द
रूप जी स्थान जीवन एवं जीव की क्रिया
जीवन की रूप जीवा एवं विष्व हैं।
जीव इतर पर्यायवाची परिवर्तन जीव मनुषीव
लापरवणी भी जीवशब्द नामका है। इसके
पारखाना से उत्तरासाधा जीवा युवा
जीव में पर्याय छोड़ जाता है वायराज्ञी
की कामी होतके परिवर्तन करता है जो कि
प्रस्तुति जीव जीवन एवं जीव के आविष्कार
के क्रिये एवं विष्व है।

(अ) - उज्जीव का वैकल्पिक हृस्तापन

उज्जीव = सौरउज्जीव, पवनउज्जीव एवं अनुवापी
उज्जीव, उज्जीव का वैकल्पिक हृस्तापन है। इसमें
पात्र वर्णन परिवर्तन हृस्तापन के लिए
अभीन ले पाप्त तरफ की पर्याय छोड़ते हैं
जो वर्चोवर्तन के लिए धारते हैं। उज्जीव,
से, पाप्त कामला की रूप जीवा मार्ग इन
पर्यायकर किया जाता है। मविष्यम् उज्जीव
के एवं मृत्युम् सौरउज्जीव, पवनउज्जीव एवं
अनुवापी उज्जीव की उभयीद की नाम
के द्वारा आनु लगते हैं। जो प्रक्रिया
उज्जीव नामा में क्रियमनि है उज्जीव के
उभयीन एवं मृत्युम् हैं जो समावृप्ती
के जिलाल द्वारा पर्यायकर की भी उपचार
की जाती है। -